MAA OMWATI DEGREECOLLEGE,

HASSANPUR (PALWAL)

NOTES

M.A(History) 2nd Semester,

History of Hariyana (Paper-4)

M.A (History) 2 semester PAPER-4
Important questions (History of Haryana)
Unit-I

Q1. हरियाणा के मध्यकालीन इतिहास के स्रोतों का वर्णन करें।

Ans:- हरियाणा क्षेत्र पर सन् 1206 ई. में दिल्ली सल्तनत का अधिकार हो गया और इस पर सन् 1526 ई. तक दिल्ली के सुलतानों का अधिकार बना रहा। इनमें अभिलेखागारीय सामग्री के अतिरिक्त तत्कालीन विद्वानों द्वारा लिखी गई पुस्तकें, आधुनिक पुस्तकें, पत्रिकाएं आदि शामिल है।

(i) अभिलेखागारीय सामग्री :-

हरियाणा के मध्यकालीन इतिहास से सम्बन्धित सामग्री भारत के कौने-कौने में मौजूद है। भारत-पाकिस्तान विभाजन के समय होने वाले

दंगे - फसादों के कारण इसमें बहुत सी - सामग्री का विनाश हो गया था।

(2) ऐतिहासिक सामग्री :— ऐतिहासिक सामग्री के अंतर्गत पुस्तकें अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्राचीन काल में अनेक देशी तथा विदेशी लेखकों ने पुस्तकें लिखी।

(3) ऐतिहासिक व साहित्यिक कृतियां :— इन्हें भी दो भागों में बांटा गया है। गैर - हरियाणवी लेखकों की कृतियां तथा हरियाणवी की कृतियां।

(i) गैर - हरियाणवी लेखकों की कृतियां :— इनमें महमूद गजनवी के काल की अलबरूनी द्वारा लिखी गई।

अफीफ की पुस्तक 'तारीखे फिरोजशाही' में भी हरियाणा के मध्यकालीन जीवन के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक जीवन के बारे में बहुत - सी जानकारियां उपलब्ध है। सरहिंदी की पुस्तक तारीखे मुबारकशाही में 1380 - 1430 ई. तक के हरियाणा के राजनीतिक इतिहास से सम्बन्धित विशेष उल्लेख मौजूद है। अब्दुल्ला की 'तारीखे दाउदी' तथा मुश्ताकी की वाकायते मुश्ताकी में लोदी वंश के काल से सम्बन्धित काफी महत्वपूर्ण जानकारियां उपलब्ध है। तैमूर के मलफूजाते तैमूरी में तैमूर द्वारा किए गए आक्रमणों का स्पष्ट वर्णन है। इब्नबतूता तुगलकों के काल में भारत आया था।

(ii) हरियाणवी लेखकों की कृतियाँ :—

हरियाणा क्षेत्र के लेखकों ने भी हरियाणा के इतिहास पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं। इनमें सल्तनतकाल के ठाकुर फेरु द्वारा लिखी गई पुस्तके सबसे अधिक महत्व रखती है।

15 वीं शताब्दी के लेखक मुहम्मद अफजल की पुस्तक बिकट कहानी तथा एक अन्य साहित्यकार की पुस्तके दर्दनामा, ख्वाबनामा तथा मशाहरनामा मे हरियाणा क्षेत्र मे उर्दु साहित्य को प्रकट करते हेतु किये गये प्रथम प्रयासो से संबंधित तथा तत्कालीन सांस्कृतिक व धार्मिक जीवन से सम्बन्धित विभिन्न जानकारियाँ मौजूद है।

मशहर या अल्लाह :— इस प्रकार के विवरण हरियाणा क्षेत्र से न के बराबर प्राप्त हुए है।

3. पुरातात्विक सामग्री :— मध्यकालीन इतिहास की पुरातात्विक सामग्री को दो भागों में बांटा सकता है।

(i) चल सामग्री

(ii) अचल सामग्री।

Q.2. आधुनिक हरियाणा के इतिहास सम्बंधी प्रमुख सूचना स्त्रोतों का वर्णन कीजिए।

Ans:- इतिहास लिखने के लिए स्त्रोत अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। किसी देश, प्रदेश या क्षेत्र से प्राप्त स्त्रोतों के आधार पर ही उस देश, प्रदेश या क्षेत्र की क्रमबद्ध घटनाओं तथा वहां के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक व राजनीतिक जीवन के बारे में स्पष्टत: पता जा सकता है। भारतीयों ने प्राचीनकाल में इतिहास लिखने में कभी भी अपनी रुचि नहीं दिखाई। किन्तु 20वीं सदी के बहुत से इतिहासकारों ने इतिहास लेखन में अपनी रुचि दिखाई तथा किसी राष्ट्र व देश के साथ - साथ उन्होंने क्षेत्रीय इतिहास भी लिखे।

(1.) अप्रकाशित दस्तावेज :-

इसके अन्तर्गत सरकारी तथा गैर सरकारी दोनों प्रकार के दस्तावेज आते हैं। सरकारी दफ्तरों तथा अभिलेखागारों में उपलब्ध होते हैं।

(2) हरियाणा राज्य अभिलेखागार में उपलब्ध सामग्री :-

वर्तमान में यह अभिलेखागार पंचकुला में स्थित है। यहां पर हरियाणा के इतिहास से सम्बन्धित बहुत से महत्वपूर्ण अप्रकाशित दस्तावेज उपलब्ध हैं। जिनसे हरियाणा के ऐतिहासिक जीवन की महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त होती हैं।

(3) राष्ट्रीय अभिलेखागार में उपलब्ध सामग्री:

यह दिल्ली में स्थित है। इसमें हरियाणा के इतिहास से सम्बन्धित बहुत से सरकारी तथा गैर-सरकारी दस्तावेज उपलब्ध है। इस अभिलेखागार पंचकुला में स्थित है।

(4) डिवीजन रिकार्ड्स :—

डिवीजन रिकार्ड्स से भी हरियाणा के इतिहास सम्बन्धी बहुत-सी महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होती है। इनमें दिल्ली, हिसार तथा अम्बाला डिवीजन के प्रेस लिस्टिड नान-प्रेस लिस्टिड व प्रमुख विभागों से सम्बन्धित रिकार्ड्स है। जिनसे हरियाणा के आधुनिक इतिहास की महत्वपूर्ण जानकारियाँ प्राप्त होती है।

5.) जिला कार्यालय :—

हरियाणा के इतिहास से सम्बन्धित कृषि, स्वास्थ्य, उद्योग, न्याय व राजस्व आदि अनेक विभागीय दस्तावेज, हरियाणा प्रदेश के जिला कार्यालयों में उपलब्ध है।

6.) प्रकाशित दस्तावेज :—

प्रेस की शुरुआत होने से भारत में भी बहुत पुस्तकों पत्र-पत्रिकाओं आदि का प्रकाशन होना आरंभ हुआ है। इस प्रकार के प्रकाशित दस्तावेजों से इतिहास सम्बन्धी विभिन्न जानकारियाँ प्राप्त होती है।

Page
Date

समाचार पत्र और पत्रिकाएं :

समाचार पत्र तथा पत्रिका भी प्राचीन समय के बारे में हमें बहुत सी जानकारियां प्रदान करती हैं। इसी प्रकार हरियाणा क्षेत्र से विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित होने वाले विभिन्न समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं से भी हरियाणा के सामाजिक राजनीतिक, आर्थिक, धार्मिक सांस्कृतिक जीवन से सम्बन्धित विभिन्न जानकारियां प्राप्त हैं।

Unit -2

Page
Date

Q→3 पानीपत के दूसरे युद्ध का विश्लेषण कीजिए।

Ans:- 26 दिसम्बर 1530 ई० को मुगल साम्राज्य के संस्थापक बाबर की मृत्यु हो गई उसके बाद उसका बेटा हुमायूं दिल्ली के सिंहासन पर विराजमान हुआ। हुमायूं ने 1540 तक शासन किया। इस दौरान उसने अपने पिता से प्राप्त साम्राज्य को अपने भाइयों में एकसमान रूप से बांट दिया। शायद उसने अपने जीवन की यह सबसे बड़ी भूल कर दी थी। इस भूल का परिणाम यह हुआ कि अफगान सरदार शेर खां ने उसे चौसा तथा बिलग्राम के युद्धों में लगातार पराजित किया।

Page
Date

पानीपत के दूसरे युद्ध के कारण :-

हुमायुं की मृत्यु के समय उसका पुत्र अकबर गुरदासपुर पंजाब में मौजूद था तत्कालीन परिस्थितियां इतनी विकट थी कि 13 साल व कुछ महीनों की अल्प आयु का अकबर अके सामने जबरन नजर आ रहा था परन्तु हुमायुं के विश्वासपात्र साथी बैरम खां ने इन विकट परिस्थितियों में भी अपना धैर्य तथा सूझ-बूझ को नहीं खोया।

(i) मुगलों तथा अफगानों में शत्रुता :-

मुगलों तथा अफगानों के बीच शत्रुता कोई नहीं थी। यह पिछले कई वर्षों से

Page
Date

निरंतर चली आ रही थी।

(ii) हुमायुं की मृत्यु :-

24 जनवरी 1556 ई० को महल की सीढ़ियों से गिरकर अचानक हुमायुं की मृत्यु हो गई। हुमायुं की मृत्यु की बात को कई दिनों तक छुपाकर रखा गया। शायद राजनीतिक कारणों से ऐसा किया गया होगा।

(iii) हेमू का दिल्ली तथा आगरा पर कब्जा :-

हुमायुं की मृत्यु का पता चलते ही अकबर के संरक्षक बैरम खां ने अपनी राजनीतिक सूझ-बूझ का परिचय देते हुए पंजाब के कलानौर में एक चबूतरा बनाकर अकबर का राज्याभिषेक कर दिया।

Page
Date

पानीपत की दूसरी लड़ाई का घटनाक्रम :-

जैसे ही मुगलों को दिल्ली मे हेमू की विजय का समाचार मिला, उनके कई सरदारों का हौसला तो उसी समय जवाब दे गया था।

पानीपत की दूसरी लड़ाई के प्रभाव :-

बैरम खां के नेतृत्व मे निःसंदेह मुगलो ने पानीपत के युद्ध मे एक महान सफलता प्राप्त की थी।

(1) अफगान शक्ति का अंत :- पानीपत के द्वितीय युद्ध ने मुगलो तथा अफगानो के मध्य चल रहे निरंतर संघर्ष का अंत कर दिया।

Page
Date

Q.4. हेमू कौन था ? उसके जीवन व

Ans भारत के इतिहास मे पानीपत के युद्धो का विस्तृत वर्णन किया गया है। पानीपत का यह क्षेत्र हरियाणा प्रदेश के अंतर्गत आता है। पानीपत की भूमि पर तीन लड़ाईया लड़ी गई। हरियाणा के निवासी हेमू ने पानीपत की दुसरी लड़ाई मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा की थी वह हरियाणा के रेवाडी नगर का रहने वाला था। उसका पूरा नाम हेमचन्द्र था हिन्दुओ की धूसर जाति से संबंध रखने वाले इसके पिता का नाम पूर्णदास था हेमू के पिता एक मध्यवर्गी परिवार से थे तथा अपनी एक दुकान चलाकर अपने परिवार का पेट भरते थे। परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी नही होने के कारण हेमू की पढाई भी ठीक ढंग से न हो सकी। वह अपनी बुद्धि तथा योग्यता के दम पर शहगाना - ए - बाजार के पद तक जा पहुंचा

हेमू ने अपनी योग्यता के कारण काफी उन्नति प्राप्त कर ली और वह आदिलशाह सूर का मुख्यमंत्री बन गया। शीघ्र ही अफगान शासन में उसे उच्च पद प्राप्त हो गया और विक्रमादित्य की उपाधि प्राप्त हो गई।

आदिलशाह विलासितापूर्ण अपना जीवन व्यतीत करता था। तथा उसकी सारी शक्तियों का प्रयोग उसका प्रधानमंत्री हेमू करता था। इस विषय में अबुल फजल लिखता है कि आदिलशाह सिर्फ नाम के लिए शासक था, उसकी सारी शक्तियों का इस्तेमाल हेमू ही करता था। हेमू ने अपने साहस तथा योग्यता से आगरा तथा दिल्ली को आसानी से जीत लिया तथा मुगलों को वहां से खदेड़ दिया। दिल्ली में तर्दी बेग के विरुद्ध विजय मिलने के पश्चात हेमू के मन में राजपद की आकांक्षा हिलोरें मारने लगी थी।

इसी विषय पर डॉ. ए. एल. श्रीवास्तव ने लिखा है कि '350 वर्षों के विदेशी शासन के बाद हेमू ने देशी शासन स्थापित किया था, जो एक सराहनीय तथा साहसिक कार्य था।

इस विषय पर डॉ. के. सी. यादव ने विक्रमादित्य की उपाधि अवश्य धारण की थी, परन्तु उसने स्वतंत्र शासक होने

पानीपत के युद्ध के मैदान में वह एक विशाल सेना लेकर पहुंचा। उसने उसने अपनी सेना को शक्तिशाली बनाने के लिए उस पर भारी खर्चा किया। इस पर उसकी आलोचना करते हुए बदायूनी ने लिखा है कि उस समय अकाल के कारण अमीर लोगो की दशा भी काफी खराब थी। सेर भर ज्वार $2\frac{1}{2}$ टका में मिलती थी। हेमू एक वीर, कुशल और योग्य सिपाही था। उसकी मृत्यु मैदान - ए - जंग में हुई।

Q.5: मुगल काल के दौरान हरियाणा के लोगो की सामाजिक और आर्थिक स्थिति की विवेचना कीजिए।

Ans! अकबर एक महान् मुगल शासक था उसने पानीपत के युद्ध के बाद अनेक सफलताऐं हासिल की उसने मुगल साम्राज्य को अत्याधिक विशालता एवं सुदृढता प्रदान की। अकबर ने अपने साम्राज्य को 15 भागो में बांट रखा था।

1. काबुल 2. दिल्ली 3. अजमेर 4. आगरा (5) अवध 6. लाहौर 7. बिहार 8. इलाहाबाद 9. अहमदनगर 10. बरार 11. मालवा 12. अहमदाबाद 13. खानदेश 14. बंगाल

उस समय हरियाणा का क्षेत्र दिल्ली सूबे में था। इस सूबे की सीमाएं पूर्व में अवध, पश्चिम में राजस्थान से उत्तर में

(सरकारों का प्रबंध)

अकबर ने अपने प्रशासन को सही ढंग से चलाने के लिए कई को पंद्रह प्रांतो मे बांट रखा था।

1.) रेवाडी :— रेवाडी सरकार का राजनीतिक महत्व था।

2.) दिल्ली सरकार :— दिल्ली सरकार केन्द्र के अधीन थी।

3.) नारनौल :— नारनौल सरकार बहुत थी, जिसमे रेवाड़ी, आसारखेडा, हादरत, आगरोहा, हिसार, भुंगीवाल, जमालपुर, अहरोनी, जींद, फतेहाबाद, थानेसर, भटंगी, खेदमुरत, बरवाला, भिवानी, महम, शंजादा - देहात, सिरसा, फतेहाबाद आदि परगने सम्मिलित थे।

4. सरहिंद :— सरहिंद सरकार मे थानेश्वर, अंबाला, डांगला, सुलतानपुर, बड़ौर।

1. आमिल गुजार :— सरकार मे वित्त विभाग का मुखिया आमिल गुजार

2. फौजदार :— फौजदार सैनिक तथा कार्यपालिका का अध्यक्ष होता था। इसकी नियुक्ति केन्द्रीय सरकार द्वारा होती थी। हर सरकार मे एक फौजदार होता था उसका काम सम्राट के आदेशो को लागू करना।

3. बितिकची तथा खजानदार :—

बितिकची तथा खजानदार की नियुक्ति आमिल गुजार की मदद के लिए सरकार में की जाती है।

परगनों का प्रबंध :—

सरकारों को अकबर ने परगनों में विभाजित कर रखा था। अकबर के काल में फतेहाबाद, हिसार, पलवल, तोशाम, पानीपत, टुहाना, बेरी, बरवाला, सवादा, करनाल, पटौदी, सोनीपत, रूढ़ी, गोहाना, हाँसी, थानेसर, बाला, कैथल आदि परगने थे।

(i) आमिल :—

परगने का वित्तीय अधिकारी आमिल था।

Unit-3

Q.6. सूफीवाद से आपका क्या अभिप्राय है? हरियाणा में सूफी मत के उद्भव एवं विकास का उल्लेख कीजिए।

Ans. मध्ययुग में हिन्दुओं के बीच भक्ति आंदोलन का उदय हुआ था। उसी प्रकार इस्लाम में सूफीवाद का जन्म हुआ था, जो भक्ति प्रेम पर आधारित है। मुख्यतः उत्तरी भारत में सूफीवाद का विस्तार हुआ था। वैसे तो सूफीवाद इस्लाम पर आधारित था परन्तु फिर भी सूफी धर्म तथा इस्लाम धर्म के बीच काफी अंतर पाया जाता था। इस विषय में एम.सी. राय ने कहा है कि प्राचीन विद्वानों ने सूफी शब्द को अलग-2 विषयों से जोड़ा है। कुछ विद्वानों का मानना था। कि शब्द का उत्पत्ति विकास अरब की एक सम्पन्न जाति के नाम से हुई है। तो कुछ विचारकों के अनुसार यह शब्द सूफ आधारित ऊन से उत्पन्न हुआ है क्योंकि अधिकतर सूफी लोग ऊन के कम्बल ओढ़कर घूमते थे।

सूफी सम्प्रदाय ने आठवीं शताब्दी में भारत में आगमन किया। परन्तु भारत में इस मत का अत्यधिक प्रसार 12 वीं शताब्दी के बाद ही हुआ। सूफी सम्प्रदाय के चार उपसम्प्रदाय थे जो कि इस प्रकार है - कादिरिया, चिश्तिया, सुहरावर्दिया और नक्शबन्दिया। सूफी सम्प्रदाय के ये चार उपसम्प्रदाय थे जो इस प्रकार है - कादिरिया, चिश्तिया। इस कारण सूफी में विभिन्न धर्मों का मिलन पाया जाता है। सूफी संतों ने आत्मा परमात्मा एवं सृष्टि के विषय में अपने विचार प्रस्तुत किये है।

सूफी संतों की शिक्षाएं :—

सूफी संतों की शिक्षाएं इस प्रकार है —

(1) संसार के विषय में :— सूफी संत परमात्मा में पूर्ण विश्वास रखते थे उनके अनुसार परमात्मा ही भूमि, जल, वायु और अग्नि के निर्माता है।

(2) गुरु की महिमा :— सूफी संतों के अनुसार गुरु का बहुत महत्व होता है। उनका मानना था कि मनुष्य की

(3) आत्मा की व्याख्या :— सूफी संतों के अनुसार, यदि मनुष्य की आत्मा शुद्ध हो तो, वह ईश्वर

के सभी गुणों को धारण कर सकता है।

4.) परमात्मा की एकता :— सूफी संत ईश्वर को परम सत्य की संज्ञा देते है।

5.) प्रेम की परिभाषा :— वे ईश्वर के एकत्व मे विश्वास रखते थे। उनके मानता था कि, ईश्वर अनश्वर, अगोचर, अपरिमित और निरपेक्ष है।

6.) मनुष्य की प्रवृत्ति :— सूफी संतो के अनुसार मानव जीवन की तीन प्रवृत्तियां होती है— शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक। यदि मनुष्य की आध्यात्मिक प्रवृत्ति शुद्ध हो, तो वह उच्च व पवित्र बनता है।

7.) दस यात्राएं :— सूफी धर्म के प्रचारक मानते थे, कि यदि मनुष्य ईश्वर के साक्षात दर्शन करना चाहता है। तो उसे दस अवस्थाओं यात्राओं को पार करना पड़ता है थे, दस यात्राएं है— संतोष, निर्धनता धर्म, संयम धर्म परायणता, कृतज्ञता, प्रायश्चित भय, आशा और दैवीय इच्छा के समक्ष आत्मसमर्पण धर्म - परायणता, कृतज्ञता, प्रायश्चित भय आशा और दैवीय इच्छा के समक्ष आत्मर्पण।

सूफी धर्म इस्लाम और वेदांत का मिश्रण है।

Q17. जार्ज थॉमस के जीवन चरित्र और उपलब्धियों की विवेचना कीजिए।

Ans:- 18 वीं सदी के अंत तक हरियाणा की राजनीतिक स्थिति काफी अस्त-व्यस्त हो चुकी थी महादजी सिंधिया की मृत्यु के बाद तो पूरे क्षेत्र के राजनीतिक हालत और भी ज्यादा खराब हो गए थे। डॉ. के. सी. माधव अनुसार, अठारहवीं शताब्दी निःसंदेह बड़ा उथल-पुथल का युग था।

जार्ज थॉमस का प्रारम्भिक जीवन :-

1756 ई. में जॉर्ज थॉमस का जन्म हुआ था। वह आयरलैंड के टिपरेरी नामक स्थान का निवासी था।

जार्ज थॉमस का संघर्ष :-

उपहार स्वरूप प्राप्त पटियाला की जागीर पर उसने बड़ी अच्छी तरह से काम किया। यह रियासत अलीगढ़ के निकट स्थित थी कलेक्टर के रूप में काम करते हुए उसने बहुत से लोगों को अपना मुरीद बना लिया था।

स्वतंत्र राज्य की स्थापना :-

मराठों के व्यवहार से जार्ज थॉमस को बहुत दुख हुआ तथा उसे मराठा सरदारों से ग्लानि हो गई। मराठों तथा जार्ज थॉमस के आपसी संबंध इतने बिगड़ गए कि मराठा सरदार दौलतराव ने उसे अपनी

सेवा से मुक्त कर दिया। 1798 ई. में मराठा सेवा से मुक्त होने के बाद वह एक बार फिर से अपनी लूटपाट की नीति पर चल पड़ा।

राज्य का विस्तार :—

स्वतंत्र राज्य की स्थापना करने के बाद जॉर्ज थॉमस ने निरंतर अपने राज्य का विकास किया।

शासन प्रबंध :—

जॉर्ज थॉमस ने राज्य विस्तार के बाद अपने शासन किया। राज्य में शांति व सुरक्षा की भावना को स्थापित करने के लिए उसने आक्रमणकारियों पर कड़ा नियंत्रण रखा।

जॉर्ज थॉमस के आक्रमण :—

जॉर्ज थॉमस एक अति महत्वाकांक्षी व्यक्ति था इसलिए वह अपने राज्य का अधिक विस्तार करना चाहता था।

सिमरनों से युद्ध :—

1798 ई. में शाह जमान ने पंजाब पर आक्रमण किया तथा अधिकतर सिमरन सरदार उसका साथ देने में लगे हुए थे।

जॉर्ज थॉमस की हार व मृत्यु :—

बेगम तथा सिमरनों की संयुक्त सेना ने हांसी तक उसका पीछा किया तथा हांसी में उसे एक बार फिर से चारों तरफ से घेर लिया।

Unit-4 14

Q.8. स्वामी दयानंद सरस्वती के आरंभिक जीवन व उनकी शिक्षाएं का वर्णन करें।

Ans:- भारत में स्वतंत्रता के लिए राजनीतिक संघर्ष के पूर्व राष्ट्रीय चेतना की जो जागृति हुई, उसमें अनेकों तत्वों का योगदान रहा परन्तु 19वीं शताब्दी में सामाजिक और धार्मिक सुधार आंदोलनों के रूप में जो सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुआ, उसकी भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण रही।

आर्य समाज की पृष्ठभूमि :-

19वीं शताब्दी में भारत में जो सामाजिक धार्मिक आंदोलन चले, उनमें आर्य समाज सबसे महत्वपूर्ण था। इस सामाजिक-धार्मिक आंदोलन ने हरियाणा के पिछड़े हुए लोगों में राष्ट्रीय चेतना लाने का सर्वप्रथम तथा सर्वाधिक प्रयास किया। इस आंदोलन या समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती थे, जिनका जन्म 1824 ई. में काठियावाड़ के टंकारा नामक गांव में एक सम्पन्न हिन्दू परिवार में हुआ था। उनके बचपन का नाम मूलशंकर था और तथा उनका परिवार शैव मतावलम्बी था। उन्होंने संस्कृत व्याकरण और वेदशास्त्रों का गहन अध्ययन किया। 14 वर्ष की आयु से ही उनके मन में सत्य की खोज के प्रति प्रेरणा पैदा हुई। इन महान समाज सुधारक ने 59 वर्ष की आयु में अपना

जीवन त्याग दिया।

आर्य समाज के सिद्धांत :

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने भारतीय समाज के स्वरूप तथा संरचना को ध्यान में रखकर ही आर्य समाज के सिद्धांतो का निर्माण किया था।

हरियाणा में आर्य समाज का विकास :

हरियाणा में 19 वीं सदी में आर्य समाज आंदोलन में लोगों ने बढ़-चढ़कर अपना योगदान दिया। इस आंदोलन ने ग्रामीण तथा पिछड़े वर्ग के लोगों को जागृत किया तथा उन्हें अंधकार से निकालकर प्रकाश का मार्ग दिखाया।

आर्य समाज की उपलब्धियां :

आर्य समाज आंदोलन का मुख्य उद्देश्य हिन्दू समाज में फैली विभिन्न बुराइयों को समाप्त कर एक स्वच्छ और स्वस्थ समाज को स्थापित करना था।

शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्धि :

हरियाणा में शिक्षा के क्षेत्र में आर्य समाज का योगदान अतुलनीय रहा। आर्य समाज ने हरियाणा में गुरुकुल शिक्षा पद्धति चलाई जिससे यहां के लोगों को शैक्षिक दृष्टि से काफी लाभ हुआ। इस शिक्षा पद्धति के महत्व को इसी बात से समझा जा सकता है।

Page
Date

Q9. हरियाणा में 1885 ई. से लेकर 1919 ई. तक राष्ट्रीय आंदोलन का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

Ans- 1757 ई. में प्लासी की लड़ाई के बाद ईस्ट इंडिया कंपनी ने बंगाल पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लिया तथा बक्सर की लड़ाई (1764 ई.) ने इस स्थिति को बिल्कुल साफ कर दिया। इस स्थिति के साथ ही भारत को अंग्रेजी उपनिवेश में बदलने की प्रक्रिया भी शुरू हो गई। आगे चलकर जहां एक ओर युद्ध और कूटनीति के माध्यम से भारत में अंग्रेजी आधिपत्य का विस्तार हुआ।

Page
Date

1.) जन-विद्रोह के कारण :-

ईस्ट इंडिया कंपनी ने जिस प्रशासनिक प्रक्रिया के तहत हरियाणा पर अपना नियंत्रण स्थापित किया था, उसी प्रक्रिया ने उन कारणों को जन्म दिया जो उस सत्ता के विरुद्ध शुरू हुए विभिन्न जन-विद्रोह के पीछे निहित थे।

(i) प्रशासनिक कारण :- अंग्रेजी साम्राज्य को मजबूत एवं सुदृढ़ बनाने के ईस्ट इंडिया कंपनी ने हरियाणा में जिस प्रशासनिक व्यवस्था को स्थापित किया उसका आधार सेना, पुलिस, न्याय व्यवस्था, राजस्व विभाग और नौकरशाही थी।

(ii) आर्थिक :— ईस्ट इंडिया कंपनी का मुख्य उद्देश्य भारत से अधिक से अधिक लाभ कमाना था। हरियाणा के किसानों के साथ किए गए भू-राजस्व समझौते में लगान की दर बहुत ऊंची रखी गई थी।

(iii) सामाजिक तथा धार्मिक कारण :— ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन के दौरान हरियाणवी समाज में भी काफी बदलाव आया। इस कंपनी शासन ने कुछ विशेष सामाजिक वर्गों को जन्म दिया था। उनकी कुछ प्रतिष्ठा प्रचलित है।

(iv) पंचायती शासन का अंत :— हरियाणा प्रदेश में पंचायतों का अतीत काल से ही विशेष महत्व रहा था तथा उन्हें यहां एक सामाजिक संस्था का दर्जा प्राप्त था। यहां के लोग इन्हीं पंचायतों के माध्यम से अपने सभी विवादों का निपटारा कर लेते थे।

2. प्रमुख विद्रोह :— 1803 ई. में हरियाणा पर ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपना औपनिवेशिक शासन स्थापित कर लिया था। उन्हें यहां पर अपना शासन स्थापित करने के लिए अनेक कठिनाइयों का सामना पड़ा। यहां के लोग स्वशासन

Page :
Date

तथा स्वतंत्रता प्रिय थे।

Q.No. 1930 ई. से 1947 ई. तक हरियाणा के देशी राज्यों में प्रजामंडल आंदोलन का निरूपण कीजिए।

Ans. भारत में बहुत लंबे समय से औपनिवेशिक सरकार की यह नीति रही थी कि देशी - नरेशों को एक - दूसरे से अलग रखा जाए।

अंग्रेजों ने अपनी सुविधा के लिए उन्हें मंडल में संगठित किया था। अंग्रेजों ने इन राज्यों की बाहरी व आंतरिक सुरक्षा की जिम्मेदारी भी अपने कंधों पर ली। इस तरह से देशी नरेश सभी जिम्मेदारियों से मुक्त होकर

Page
Date

विलासी व आरामी का जीवन जीने लगे।

प्रजामंडल आंदोलन की पृष्ठभूमि :

अंग्रेजों ने भारत के अधिकांश क्षेत्रों में अपनी औपनिवेशिक सत्ता की स्थापना की।

इन रियासतों की शासन व्यवस्था का स्वरूप सामंतवादी था। राजा अपनी इच्छानुसार किसानों पर कर लगाते थे जिसके कारण लोगों का जीवन स्तर काफी नीचा था।

1920 ई. में कांग्रेस ने ब्रिटिश सरकार से उत्तरदायी शासन की मांग की।

Scanned with OKEN Scanner

प्रजामंडल आंदोलन का विकास :—

प्रजामंडल आंदोलन देशी रियासतों द्वारा चलाया जाने वाला जन - आंदोलन था। इसमें साधारण किसान अपने शासकों के अत्याचारों के खिलाफ संघर्ष कर रहे थे तथा अपनी मांगों मंगवाने के लिए उन्हें मजबूर कर रहे थे।

1. दोजाना :— यह रियासत 1805 ई. में 24 गांवों के समूह के रूप में अस्तित्व में आई थी मुहम्मद इमतदार अली खां यहां का शासक था।

2. पटौदी :— 1805 ई. के दूसरे आंग्ल - मराठा युद्ध के बाद यह रियासत अस्तित्व में आई थी।

3. लोहारू :— हरियाणा क्षेत्र में हिसार जिले के अंतर्गत आने वाली यह छोटी सी रियासत थी।

4. जींद :— इस रियासत का राजा रणबीर सिंह था। वह भी अपने समकालीन अन्य देशी राजाओं की तरह शासन की दृष्टि से पूर्णत: आयोग्य था। उसकी जन कल्याणकारी कार्यों में जरा - सी भी रुचि नहीं थी वह एक भ्रष्ट तथा अनैतिक राजा था।

Scanned with OKEN Scanner